इसी समय हिन्दी-उपन्यास के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचन्द का आगमन हुआ। उन्होंने हिन्दी उपन्यास को अपने पैरों पर खड़ा किया। हिन्दी-उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द के योगदान के सम्बन्ध में डॉ० रामविलास शर्मा का निम्न कथन सत्य है- "प्रेमचन्द ने 'चन्द्रकांता' के पाठकों को अपनी तरफ ही नहीं खींचा, चन्द्रकांता में अरुचि भी पैदा की। जन सामान्य के लिए उन्होंने नये मापदण्ड कायम किये और साहित्य के नये पाठक भी तैयार किये।

प्रेमचन्द ने उपन्यास को जीवन का मुख्य अंग मानकर उपन्यास के माध्यम से मानव-जीवन के विविध आख्यानों और कथनों पर प्रकाश डाला। उपन्यास को उन्होंने मानव-जीवन का साधन बनाया है। उन्होंने उपन्यास की व्याख्या करते हुए लिखा है- "मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।

प्रेमचन्द ने सामाजिक कुरीतियों का खुलकर विरोध किया है। वे समाज के पीड़ितों और शोषितों की वकालत करने लिए अपने उपन्यासों के माध्यम से सामने आये हैं। उन्होंने अत्याचार को ललकारा है। इस प्रकार प्रेमचन्द जी अपने उपन्यासों में लोकजीवन को लेकर आये हैं।

मुंशी प्रेमचन्द ने सामाजिक कुरीतियों को दूर करके नैतिक आदर्शों की स्थापना करने में पूर्णतः सफल हुए हैं। उन्होंने कल्पना के स्थान पर हिन्दी उपन्यास को यथार्थ का धरातल दिया है और उसका कायाकल्प भी किया है। इसलिए मुंशी प्रेमचन्द को हिन्दी-उपन्यास का सम्राट कहा जाता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 14/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० खुटौना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर -

शास्त्री प्रथम खण्ड
अनिवार्य द्वितीय पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी
'निर्मला' उपन्यास, लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न:- "हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचन्द का अपूर्व योग है"- इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर:- हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचन्द का उल्लेखनीय योगदान है। प्रेमचन्द के यथार्थवाद से पूर्व हिन्दी-उपन्यास-साहित्य पाठकों के मनोरंजन की वस्तु थी। इसलिए हम प्रेमचन्द के पूर्ववर्ती उपन्यास-साहित्य की सृजनकला को हिन्दी उपन्यासों का बाल्यकाल कह सकते हैं। प्रेमचन्द ने हिन्दी-उपन्यास के विकास को अवरुद्ध करने वाले कारणों को समझा और उसे दूर करने की भरपूर चेष्टा की। उन्होंने हिन्दी-उपन्यास के विकास की दिशा ही बदल दी। परिणामस्वरूप हिन्दी-उपन्यास कल्पना लोक से उतर कर जीवन के ठोस धरातल पर आ गया। साहित्यकार के चिन्तन का उसकी कृतियों पर प्रभाव पड़ता है, इसे स्वीकार करते हुए प्रेमचन्द ने लिखा है- "वास्तव में कोई रचना रचयिता के मनोभावों का, उसके चरित्र का, उसके जीवन दर्शन का आइना होती है"

प्रेमचन्द से पूर्व हिन्दी-उपन्यास-साहित्य का जीवन से कोई लगाव नहीं था। लोकरंजन प्रवृत्ति को संतुष्ट करने के लिए बाबू देवकीनन्दन खत्री ने हिन्दी में तिलस्म और ऐय्यारी से भरपूर मनोरंजन प्रधान उपन्यासों की रचना की। इसी काल में गोपाल राम गहमरी ने जासूसी उपन्यासों की नींव डाली। पंडित किशोरीलाल गोस्वामी ने सामाजिक समस्याओं की ओर ध्यान तो दिया, परन्तु उनके उपन्यासों में भी तिलस्म और ऐय्यारी की ही प्रधानता रही। हिन्दी उपन्यास के प्रारम्भिक विकास पर दूसरी परम्परा का गहरा प्रभाव पड़ा। हिन्दी उपन्यास में लोकरंजन के स्थान पर लोकजीवन की व्याख्या होने लगी। शेष आगे -

Page No.:
Date: / /

इस भूल के प्रति सावधान होने के लिए कहा है। विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटीन ने भी अनुभव किया था कि जब तक वर्तमान विश्व गाँधीवाद के सिद्धान्तों को हृदय से अपना नहीं लेता तब तक विश्व में शान्ति नहीं होगी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
14/12/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'पथिक'

कवि - रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :—

प्रश्न :- कवि ने व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए कौन सी माँग की है?

उत्तर :- कवि रामनरेश त्रिपाठी जी ने 'पथिक' काव्य में व्यक्तित्व को ~~ऊपर~~ ऊपर उठाने के लिए एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण बात की माँग की है, जिसका दिनानुदिन अभाव होता जा रहा है। हम यह अच्छी तरह से देख रहे हैं कि आये दिन दुनिया से वास्तविकता का भाव दूर होता जा रहा है। सारी दुनिया बिना सोचे-समझे उग्रवादियों के विरोध में शामिल होती जा रही है। गाँधीवाद साम्यवाद को खुलकर चुनौती दे चुका है। 'पथिक' का कवि गाँधीवादी है और गाँधीवाद में ईश्वर की अलौकिक सत्ता को सिर झुकाकर स्वीकार किया गया है। त्रिपाठी जी ने भी इस पुस्तक में आस्तिकता पर जोर देते हुए बतलाया है कि 'जगतपति' की इच्छा से ही इस संसार की रचना हुई है। यह समस्त संसार इसी की क्रीड़ा का रूपक है। उसी की कृपा से पृथ्वी का उद्भव, पालन और प्रलय होता है। व्यक्तित्व को उच्च शिखर पहुँचाने के लिए कवि द्वारा सुझाये गये माँगों को स्वीकार करके ही अपने देश में शान्ति स्थापित कर सकते हैं।

प्रश्न :- कवि अनन्त शक्ति को निराधार कहने वाले लोगों को क्या सन्देश देना चाहते हैं?

उत्तर :- कवि के कथनानुसार वर्तमान संसार ने उस अनन्त शक्ति को निराधार कल्पना कहकर टाल दिया है जिसका भीषण दुष्परिणाम यह हुआ कि संसार के कोने-कोने में युद्ध, दमन, अत्याचार, बलात्कार इत्यादि का नग्न नृत्य हो रहा है। कवि ने

शेष आगे—